GRT

Golden Research Thoughts

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 6 | December - 2016

''भगवान श्रीकृष्ण की पौराणिक द्वारिका और गोमतीनदी; आद्यैतिहासिक एक अध्ययन''

Dr. C.S. Somanvanshi[1] , प्रो. (प्रि.) नरन्तक शर्मा[2]

[1]M.A. (4th Subjects), Ph.D., M.R.P./M.R.P. (U.G.C)

Research Scholare, Ph.D. Recognized Guidel Research Supervisor , Adipur (Kutch)

[2]डिग्री कॉलेज, जगतसुख कुल्लु–मनाली, हिमाचल.

प्रस्तावना

भारत वर्ष के चार यात्रा धामों में और सातपुरा में भगवान श्री कृष्ण की कर्मभूमि द्वारिकापुरी के निकट किसी समय गोमती नदी अपनी प्रबल बेग धारा के द्वारा बहती थी, किन्तु अब उसकी धारा अबरूद्ध हो गयी है, उसकी दुर्दशा खराब है। हिन्दु धर्म में गोमती नदी में स्नान करने की महिमा का महत्त्व बहुत श्रद्धापूर्वक लिखा जाता रहा है। इस नदी का किनारा दोनों तरफ से टूट गया है। १० से १५ फुट रेती अर्थात् बालू का ढेर चढ़ गया है।[१] विशालतम् ग्रन्थ "भगवदमण्डल"[२(क)] जो कि कई भागों में है, गोमती नदी की उसमे काफी सुन्दर रूप से चर्चा की गयी है। इस तरह से गोमती नदी में यात्रा रूप बिना स्नान किये ही लोग चले जाते हैं। इसलिए इस नदी का यथा योग्य मरम्मत कार्य होना जरूरी है। कम से कम ५० ट्रक कीचड़–बालू, पत्थर एवं रेती के थर (परतें) जमा हो गया है। इसी कारण से पानी की सतह कम हो गयी है। आने वाले महीने में पुरूषोत्तम भगवान की श्रद्धा एवं पूजा के लिए समारोह योजना की बात जाहिर हुई है। इसी लिए इस घाट का जीर्णोद्धार करना बहुत ही जरूरी है।

सार–अंकुश विभाग के द्वारा एक बढ़िया योजना तैयार की गयी थी, इसकी रिपोर्ट सरकार श्री को भेजी भी गयी थी। लेकिन अभी तक कुछ नहीं हुआ। इसके लिए पाँच लाख बजट काफी है। अन्य यात्रा धामों के लिए करोड़ों की योजना होती है। लेकिन इस पवित्र गोमती घाट का जीर्णोद्धार होता ही नहीं है। ताजेतर में सार–धर्म के डन्डी स्वामी श्री सदानन्द सरस्वती जी के पास द्वारिकापुरी के नगर–वासियों ने मुलाकात करके इसकी पहेल की थी और ताबड़तोड़ यह कार्य पूर्ण किया जाय, ऐसी पहेल की गयी थी।

भारतवर्ष के चार मुख्य धाम भगवान श्री कृष्ण की कर्म–भूमि द्वारिकाधीश मन्दिर के पास बहती हुई गोमती नदी जिसका हिन्दु धर्म में इस स्थान का बहुत ही महत्त्व है। महाभारत के भंयकर युद्ध के अन्त होने पर जब श्रीकृष्ण, दुर्योधन की माता गांधारी विलाप कर रही थी तभी श्री कृष्ण उन्हें सांतवना देने पहुँचे, उसी समय माँ गांधारी ने अपने १०० बेटों के मरने के विलाप में उसने श्रीकृष्ण को शाप दे दिया, जिसकी वजह से युद्ध के पश्चात् ३६वें वर्ष में प्रभास में यादव परस्पर लड़–लड़कर मर गये। प्रभास की सरिता, पवित्र पावन सरस्वती नदी के किनारे जहाँ पर यह नरसंहार हुआ था, वह भूमि अभी भी यादवा स्थली के नाम से जानी जाती है।[२(ख)] मैं लेखक डॉ. चन्द्रिकासिंह सोमवंशी स्वयं जाकर 'यादवस्थली' देखा है। यादवों के संहार के साथ ही सौराष्ट्र के एक बलवान एवं शक्तिशाली राजकुल का अन्त हुआ। यादवों व पाण्डवों के बीच मधुर सम्बन्ध थे। पाण्डव व यादव लोग वैवाहिक रूप से भी एक दूसरे से जुड़े हुए थे। सुभद्रा अर्जुन की पत्नी थी, बलराम की पुत्री **'वत्सला'** का विवाह पाण्डव भीम के पुत्र घटोत्कच के साथ हुआ था।[३] जिसकी वजह से पाण्डव लोग बार–बार द्वारिकापुरी आते थे। सौराष्ट्र में अनेक तीर्थस्थान होने की वजह से भी पाण्डव लोग बार–बार द्वारिकापुरी आते रहते थे। महाभारत में अनेकों स्थानों पर इसका उल्लेख मिलता है। सौराष्ट्र में पाण्डवों के रहने की कई निशानियाँ आज भी विद्यमान है।[४] द्वारिकापुरी से भी कृष्ण के बड़े भाई बलरामजी जब माँ सरस्वती की यात्रा पर गये हुए थे, तो जब वे यमुना नदी के उद्गम स्थल **'कारापावनतीर्थ'** में पहुँचे तो वहाँ उन्हें नारद मुनि मिले, उन्होंने उन्हें बताया कि कुरुक्षेत्र के महाभारत युद्ध में भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कर्ण इत्यादि महान् योद्धा वीर गति को प्राप्त हुए है। दुर्योधन, भीम के साथ गदायुद्ध के लिए उत्सुक है। यह सुनकर बलराम ने अपने सेवकों व समस्त आदमियों को द्वारिका वापस चलने का आदेश दिया, जो कि उनके साथ थे।[५] बाद में कुरूक्षेत्र होते द्वारिकापुरी पहुँचे, इसके बाद मे पवित्र गोमती नदी में स्नान भी किया था। गोमती नदी सुलतानपुर से

५२ मील दक्षिण दिशा की तरफ जौनपुर जिला तक आयी हुई है। यहाँ पर इस गोमती नदी पर एक सुन्दर सा पुल बना हुआ है। जौनपुर से १८ मील दक्षिण की तरफ वाराणसी जिले की **नन्द-नदी** आकर गोमती में मिलती है। यहीं पर गोमती नदी गंगा से मिलन करती है। वहाँ से कुछ नौका संलग्न सेतु होकर ओभ और शीत ऋतु में गोमती धारा पार होते हैं। बरसात के समय में नौका विहार के अलावा नदी पार होने का दूसरा कोई रास्ता नहीं होता है। दिलवार घाट से खेरी जिले के मुहम्मदी नामक स्थान तक नदी से प्रत्येक समय में ५०० जितनी नौकाएँ आती जाती रहती है। **हिमालय की एक चट्टान का नाम भी गोमती शिला[६] है। जिस पर अर्जुन का शरीर गला था।** ग्वालपाडा नामक स्थान जो कि आसम में है वहाँ पर **'कछारी'** और **'कोच'** जाति की संख्या काफी है। डॉ. नगेन्द्र नाथ बसु ने इन कछारी एवं कोच जाति को आदिम जाति का माना है। जबकि मेरे मतानुसार यह कछारी एवं कोच जाति महाभारत कालीन **भीमसेन पुत्र घटोत्कच के वंशज हैं** आगे चल **घटोत्कच का वंश इनका कुनबा** (तादात) काफी दूर तक फैला। घाघरा नदी के इर्द-गिर्द इनकी आबादी उत्तर प्रदेश के कई जिलों में लगभग दो लाख जितनी भी है।[७(क)]

महाभारत में वर्णित है कि लाक्षागृह के जलने के बाद पाँच पाण्डव गुप्त रास्ते से जिस जगह पर पहुँचे थे, वह उस जंगल का रास्ता **हिडिम्बा** के राज्य में जाता था। राक्षस ने उनका संहार करने के लिए हिडिम्बा को भेजा था। जन्म लेते ही घटोत्कच जवान हो गया था तथा महाबलशाली महामायाबी वीर यौद्धा था। हिडिम्बा, बालक घटोत्कच के पास आकर **घटो-कास्योतकच** यह शब्द बोली, बस उसी वक्त से उस बालक का नाम **घटोत्कच** हो गया।[७(ख)] महाभारत युद्ध के उपरान्त ३६वाँ वर्ष प्रारम्भ हुआ तो युधिष्ठिर को अनेकों आशकुन दिखायी देने लगे। प्रचण्ड आँधी चलने लगी, कंकड़ पत्थरों की वर्षा होने लगी, उल्कापात होने लगा, नदियों का जल सूख गया। सूर्यमण्डल निस्तेज दिखाई देने लगा। महाराज युधिष्ठिर को एक दुख भरा समाचार मिला कि मूसल के कारण श्रीकृष्ण और बलभद्र (बलराम जी) को छोड़ कर समस्त यदुवंशियों का संहार हो गया है।[८] इसके बाद अक्रूर जी की स्त्रियाँ तप करने के लिए बन में चली गयी हैं। **रूक्मिणी, शैल्या** तथा **जामवन्ती** आदि ने अग्नि में प्रवेश होकर सती हो गयीं। अर्जुन रोता हुआ **ब्यास-ऋषि** के आश्रम में चल गया। **कृष्ण की कर्मभूमि द्वारिकापुरी में जब अर्जुन आया तो क्या देखा कि द्वारिकापुरी जलमग्न हो चुकी है, यह देखकर अर्जुन पृथ्वी की परिक्रमा करने की इच्छा से उत्तर दिशा की ओर चल दिये।** तीर्थों सरोवरों, नदियों के तटों पर घूमते-घूमते पाण्डव **लालसागर** के तट पर पहुँचे, वहाँ **अग्निदेव** ने प्रकट होकर अर्जुन को **'खाण्डवनबन'** जलाने के लिए कहा। **'गांडीव धनुष'** और **'तुणीर'** जल में फेंक दिया। पाण्डव लवण समुद्र के उत्तर तट से होते हुए पश्चिम की और चले गये। उत्तर में हिमालय को लाँघ कर पाण्डव मरूस्थल में पहुँचे और वहाँ से सुमेरिन पर्वत को देख कर उधर बढ़ने लग। तीव्र गति से चलते पाण्डवों के साथ चलने में असमर्थ द्रोपदी गिर पड़ी। बाद में युधिष्ठिर और कुत्ते को छोड़कर सभी पाण्डव जल समाधि विलय हो गये और स्वर्ग से एक रथ आया और युधिष्ठिर अपने कुत्ते के साथ साक्षात् शरीर से स्वर्ग चले गये।

ऐसा माना जाता है कि पौराणिक द्वारिकापुरी भगवान श्रीकृष्ण ने बसायी थी, जो कि समुद्र ने अपने आगोश में निगल लिया। जो कि वह बड़े ही ऐतिहासिक महत्त्व की बात है। जो प्रमाणित करती है कि द्वारिकापुरी महाभारत स्थल है और भारतवर्ष के इतिहास में एक खाली जगह की पूर्ति करती है। सन् १९७९ से सन् १९८० ई. सन् के बीच द्वारिका के तट पर आद्यैतिहासिक (Prto-Historic age) बस्ती के अवशेष प्राप्त हुए हैं। जब द्वारिकाधीश मन्दिर जो कि १३वीं से १५वीं शताब्दी ई. सन् के बीच बना था, के अग्रप्रांगण में स्थित आधुनिक इमारत को तोड़ा गया और तीन मन्दिरों के अवशेष जो कि क्रमश पहली शताब्दी ई० पू., दूसरी शताब्दी और ६ वीं शताब्दी के बीच बने हैं, उनके अवशेष दिखाई दिये, समुद्र के अतिक्रमणों से तीनों युगों में बने हुए मन्दिर नष्ट हो गये थे, परन्तु नौवीं शताब्दी के मन्दिर की तीक्षत दीवारें तथा स्तंभ मूल प्रतिगमन के समय बालू (रेत) से ढक गये थे।[९] समुद्र तट पर स्थित मन्दिरों के नीचे जब १० मीटर की गहरायी तक खुदाई की गयी, तो पता चला कि दो प्राचीन नगरियाँ जो कि १०वीं, १४वीं एवं १५वीं शताब्दी ई. पू. में जल में निमग्न हो गयी थी, मिट्टी के बर्तनों के विभिन्न संरचनाओं के कई लुंठित टुकड़े, जिन्हें चमकदार लालपात[१०] कहा जाता है, स्तरीकृत परतों से प्राप्त हुए सोमनाथ की आदिप्रभास संस्कृति, जो कि चमकदार लाल रंग के पात्रों का उपयोग करती थी, **कार्बन १४ प्रणाली (रसायशास्त्र की एक पद्धति) के अनुसार १५००-१२०० शताब्दी ई. पूर्व की निर्धारित की गयी है।** इसलिए द्वारका का आदि आदिवास भी इसी समय का हो सकता है जो कि महाभारत के समयान्तराल में ठीक-ठीक रूप में बैठता है और महाभारत से पुष्टि भी होती है। तट पर १५वीं-१४वीं शताब्दी के कुछ प्राप्त निवेश के आधार पर द्वारिकापुरी के तथ्यों की पुष्टि करना पर्याप्त नहीं है, जो कि महाभारत, हरिवंश पुराण, भागवतपुराण, विष्णु पुराण, स्कन्द पुराण व वायुपुराण इत्यादि में कहीं-न-कहीं मिलते हैं। द्वारिकापुरी सागर के तलिये में कैसे डूबी, सागर विज्ञान बेत्राओं की यह जानने की बहुत ही जिज्ञासा रही है। प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित तथ्यों की पुष्टि के लिए ऐतिहासिक नगरी के खण्डहर जो कि राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान, गोवा से सम्बन्ध प्रख्यात सम्मान प्राप्त वैज्ञानिक रहे हैं। वे पिछले कई वर्षों से समुद्र में डूबी द्वारिकापुरी से सम्बन्धित ऐतिहासिक तथ्यों की खोज में जुटे हुए थे। डॉ. राव एक प्रसिद्ध ख्यातिप्राप्त समुद्रशास्त्रिय पुरातात्विक बेत्ता माने जाते हैं। समुद्र के तल सी गोद में समाये हुए हैं, उनके खण्डहरों को ढूँढना जरूरी है। द्वारिकापुरी से ३० कि.मी. की दूरी पर बेट द्वारिका के रूप में स्थित है परम्परागत रूप से द्वारिका द्वीप या फिर **शंखोधरा** के नाम से जाना जाता रहा है। यह भगवान श्रीकृष्णचन्द्र का विनोदस्थली भी माना जाता है। सन् १९८२ ई. सन् में इस पर शैलद्वार परिच्छेद ओखा बन्दरगाह के आस-पास अनगढ़े पत्थर के परकोट के

टुकड़े (खण्ड) और पश्च-हड़प्पीय मिट्टी के वर्तन एवं चमकदार लाल पात्र भी प्राप्त हुए हैं, खण्डित परकोटा इस बात को यह दर्शाता है कि समुद्र की अथाह आगोश में डूबा (निमग्न) द्वारिकापुरी नगरी के मलवे का ढेर भरा पड़ा है।[११] बेट द्वारका द्वीप के पूर्वी किनारे पर **सिद्धि बाबा पीर** से लेकर **बालापुर खाड़ी** तक के सागर उन्मुख तटों की गवेषणा प्राचीन शहर के खण्डरों के लिए की गयी थी।

सन् १९८२ ई. से सन् १९८५ ई. के दौरान चले तीन अभियानों में करीब २५ बार (पच्चीस बार) की खोजों में से इस इलाके की खोज-बीन (छान-बीन) की गयी, कुल मिला कर ४०० (चार सौ) मानव घण्टों की गोताखोरी, संरचनात्मक (स्ट्रकचरल) अवशेषों को ढूँढने के लिए की गयी थी, पुरातात्विक वस्तुओं को निकालने एवम् नमूने प्राप्त करने के लिए जहाँ जरुरत पड़ी, वहाँ वायु का फुहारा या वायव उत्थापन (एयरलिफ्टिंग) की प्रणालियों का उपयोग किया गया। भारतीय गोताखोरों ने जो कि तैराकी-रेखा प्रविधि अपनायी, उससे उन्हें संरचनात्मक अवशेषों को ढूँढने में सहज सहायता मिला। समुद्रतल का लोहे की छड़ से परीक्षण करके चिन्हिक उत्पलव डालने में आसानी हुई। उत्पलवों की स्थिति का निर्धारण भूतपूर्व नवसैनिक जल-सर्वेक्षक एवं राष्ट्रीय समुद्र-वेत्ताशास्त्र (समुद्र विज्ञान) संस्थान के सर्वेक्षकों ने 'सेक्सटेंट' के जरिये किया था। वास्तविक रूप में समुद्र तल की खुदाई तीन चरणों में की गयी थी, पहले हाथों से खुदाई करने वाले औजारों का प्रयोग करके कुछ पुरातात्विक वस्तुएँ प्रकाश में लायीं गयीं। दूसरे चरण में नियंत्रित खुदाई के लिए एक निराधार लोहे का बोक्स १ x १ x २ मी. नींव कोष्टक (ट्रच) में समुद्र-तल में रखा गया और स्वदेश में ही निर्मित **'वायब उत्थापन'** (एयरलिफ्ट) से नींव-कोष्ठक के अन्दर की, आदिकाल में जमी परतों (ऊपर संस्तर) को निष्कादित किया गया। नौका में स्थित दो फौलादी टंकियों में अवसाद (सेंडिमेन्ट) को जमा किया गया गोताखारे को **'नींव-कोष्ठक'** के अन्दर ही **'वायुदबाव नियंत्रित'** करते हुए **'वायब उत्थान'** को परिचालित करना पड़ा। जब संरचनात्मक अवशेष प्रकट हुए तो गोताखोर ने वायु-फुहारे से अवसाद का ढीला करके पुरातात्विक वस्तुओं को एकत्रित किया गया और नॉयलन के थैले में भर-भर कर ऊपर भेज दिया गया।

प्रकट हुई संरचनात्मक आलेख गोताखोर ने तैयार किये, बेट द्वारिकापुरी के निकट कच्छ की खाड़ी में दृष्टिगोचरता बहुत ही खराब थी, परंतु द्वारिका के निकट अरब महासागर में काफी अच्छी थी, इसलिए अन्तर्जलीय प्रचालन का छायाकंन द्वारिका में विस्तार-पूर्वक किया गया। वेदावती जो कि बालू-तट से जा भिड़ी थी। सन् १९८४ ई. से सन् १९८६ ई. तक दूसरे, तीसरे, चौथे एवं पाँचवे अभियानों में वायव उत्थापन तथा वायु-फुहारा प्रविधिका उपयोग द्वारिका नगरी में निमज्जित संरचनाओं के उत्खनन तथा जाँच-पड़ताल के लिए संस्तर का उत्खनन करने से पहले निमज्जित संरचनाओं पर उसी समुद्री वनस्पति को हटाना अति आवश्यक था। गोताखोरों ने द्वारिका सागर में ४५० (चार सौ पचास) मानव-घंटे गोताखोरी की और उसे काफी प्रतिकूल परिस्थितियों में काम करना पड़ा कुछ अवसरों पर सागर इतना विक्षुब्ध था कि गोताखोरों को निमज्जित संरचनाओं का छायांकन करने तथा आलेख बनाने के लिए कई दिनों तक रुकना पड़ा। बेट द्वारिकापुरी द्वीप के निकट **शंकोलिया बिन्दु** के नजदीक एक बार तो नाव पत्थर से टकरा गयी तथा दूसरी बार 'बेदावती' तूफान में एक बालू तट से जा भिड़ी थी। सागर के 'मूड़' का क्या ठिकाना था। फिर भी समुद्री पुरातत्व एकक के पास तट तक पहुँचने के लिए न तो कोई जलपोते हैं, न तट पर उतरने की कोइ सुविधा ही उपलब्ध है, एक बार एक पुरातत्वज्ञ का कॉमेट परियोजना के एक बीमार सदस्य के लिए दवा लाने तैर कर ही द्वारिका तट पर जाना पड़ा था।[१२] इन कठिनाइयों के बावजूद इतने कम समय तथा छोटे बजट में जो परिणाम प्राप्त हुए, वे काफी उल्लेखनीय हैं श्रीयुत वादोड़कर का किया हुआ अति उत्कृष्ट किस्म का अन्तर्जलीय रंगीन छायाचित्रण तथा राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान एवं समुद्री पुरातत्व एकक के वैज्ञानिकों की टीम-भावना, यही नहीं बल्कि बेदावती के नाविक-दल का उत्साह भी सराहनीय है। ओशन लॉजिस्टिकस के गोताखोरों द्वारा किया गया अति उत्कृष्ट कार्य प्रशसनीय है, वे अब समुद्री खुदाई में सक्षम हैं।

उपलब्धियों की दृष्टि से यदि देखा जाय तो बहुत से ढेर-सारी उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं। अरब महासागर तथा कच्छ की खाड़ी में द्वारिका जैसे शहरों की खोज समुद्रीय पुरातत्वज्ञों तथा इतिहासकारों के लिए अव्वल दर्जे के महत्त्व की बात है, समुद्र तल के एकान्तरक परिवर्तन पर प्राप्त वैज्ञानिक आँकड़े समुद्रशास्त्र बेत्ताओं तथा पुरातत्वशास्त्र बेत्ताओं के लिए बहुत ही महत्त्व के हैं। द्वारिका सागर से निकाले गये लकड़ी व लोहे के लंगरों पर वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया जा रहा है। भौतिकी अनुसंधान शाला के भूगर्भशास्त्री प्राचीन काल के निर्माण में काम में लाये जाने वाले बालुकाश्म की तिथि-निर्धारित करने में बहुत दिलचस्पी ले रहे हैं। निकाली गयी वस्तुओं से पता चलता है कि विदेशों तथा साइप्रंस के साथ द्वारिका के समुद्र का रास्ता व्यापार का प्रमुख केन्द्र था। कच्छ की खाड़ी में भूमि में दबे पड़े अनगढ़ पत्थर के परकोटे तथा ३.६ मीटर की गहराई में सागर की ओर डूबी हुई दीवार की खोज से इस बात की पुष्टि होती है कि सचमुच रूप से ही द्वारिकापुरी को सागर ने अपने आगोश में ले लिया था। अर्थात् निगल गया था।

महाभारत ग्रंथ मे वर्णित है कि किले में बनी अन्य इमारतों तथा विशाल दीवारों के निर्माण के समय समुद्र स्तर अब से १.५ मीटर नीचा रहा हो गा। १४०० ई. पू. से अभी तक समुद्र स्तर में ५ मीटर की वृद्धि हुई है, ऐसी कल्पना की जाती है कि निर्माण के समय बहुत बड़े-बड़े पत्थरों के टुकड़ों का प्रयोग किया गया था जिससे ज्वार-भाटे या तीव्र धारा से वे विचलित नहीं हुए। तट पर स्थित दीवारों तथा समुद्र में निमज्जित दीवारों के बीच अन्तरज्वारिय कटिबन्ध में अर्थात् भाटे के समय पानी जहाँ तक उतरता है, उस समुद्री जमीन में सेकड़ों टन छोटे-छोटे इमारती टुकड़े पड़े हैं। यह मलवा आवास-प्रवास की इमारत को सूचित करता है जिसे कि समुद्र ने नष्ट कर दिया था। मैं डॉ. सोमवंशी चन्द्रिकासिंह, रिसर्च स्कॉलर, यह कहना चाहूँगा कि **"उबलते हुए अरब महासागर की विकराल लहरों की थपेड़ों ने**

द्वारिकापुरी नगरी के दीवारों को इतनी चोंटे पहुँचायी लगातार की, नगरों की दीवारें टूट-टूट कर अथाह अरब सागर को गोद में सदा-सदा के लिए सो गयीं, इस तरह से सागर ने अपनी आगोश में द्वारिका नगरी को निगल लिया अर्थात डूबो दिया। परकोटे से मालूम पड़ता है कि शुरू में यह नगरी परकोटे से घिरी हुई थी और इसका क्षेत्रफल उत्तर में बालापुर खाड़ी से दक्षिण में सिद्धि बाबा पीर तक की ४ कि.मी. तथा पूर्व-पश्चिम में कम-से-कम आधा (१/२) कि.मी. रहा हो गा। यह कोई छोटी बस्ती नहीं है। वास्तव में यह शहर 'महाकाव्यों' में वर्णित नगरी शब्द का अधिकारी रहा हो गा। यह उत्तर कालीन तक्षशिला तथा राजगृह शहरों से काफी बड़ा शहर रहा हो गा। इसलिए इसे द्वारिका नगरी का अभिधान देना उचित ही है, जैसा कि प्राचीन ग्रन्थों में वर्णन मिलता है।" *इस द्वीप पर बना हुआ या कम से कम तीन तरफ से समुद्र से घिरा हुआ शंखीधरा वस्तुतः एक किला रहा हो गा। वारिदुर्ग जिसका उल्लेख पुराणों में किया गया है। अब सवाल यह उठता है कि क्या उस वक्त में लोग प्रविधिक (तकनिकी) दृष्टि से प्रति-अपरदनकारी यानि कटाव रोकने वाली दीवारे बनाने में सक्षम एवं कुशल थे। उनके पूर्वज हड़प्पीय लोगों ने भी कोटड़ा यानि कच्छ की पावन भूमि 'धोलावीरा' स्थल में मिट्टी के मूलभागवाली पत्थरों की काफी बड़ी और लम्बी प्रति-अपरदनकारी दीवारे बनायी थीं।* ***मेरे मतानुसार धोलावीरा नगरी की नगर योजना बहुत ही विशाल थी, उसकी तुलना मोहनजोदड़ो एवं हड़प्पा की नगर-योजना के ही समान थी। बन्दरगाह-शहर-शंखोधरा में नावों के छोड़े जाने की सुविधा मौजूद थी, जैसा कि दक्षिण किनारे पर स्थित पत्थरों में कटी-संसर्पिका से अनुमान लगाया जा सकता है।***

द्वारिकापुरी में जो समुद्रशास्त्रीय पुरातात्विक उत्खनन कार्य हुआ उसके परिणाम स्वरूप इतिहासकारों और सागर विज्ञान-बेत्ताओं के लिए बहुमूल्य है। समुद्र भगवान का मन्दिर समुद्रनारायण जहाँ पर गोमती नदी सागर से आकर मिलती है। एक सुरक्षित बन्दरगाह तक जाने के द्वार को सूचित करता है। तीसरे एवं चौथे अभियानों में अन्तर्जलीय गवेषणा के लिए मच्छीमार नौकाओं का इस्तेमाल किया गया। दिसम्बर सन् १९८६ ई. में पाँचवे अभियान में एक छोटे परंतु आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित जलयान ***'बेदावती'*** *को चाटर किया गया। इसमें दो वायु-संपीडियों (एयर कन्प्रेसरों) एक डेरिक, एक भामित्र तथा अंधेरे कक्ष की सुविधा थी। एक महीने की अन्तर्जल गवेषणों के दौरान कई निमग्न इमारतों तथा पोत अवशेषों की पहचान की गयी। दिसम्बर महीने के अन्त सागर के अत्यन्त तूफानी हो जाने के कारण से आगे अन्वेषण कार्य को निलम्बित करना पड़ा। आद्यैतिहासिक द्वारिका (Proto-Histroric Dwarika) सागर में निमज्जित प्रिज्मीय आकृ ति के विशाल पाषाणों से बनी संरचनाओं पर जमें हुए प्रवर्धन तथा बालू की परत को हटाने के बाद उन्हें प्रलेखित किया गया। परकोटे के एक यथावत विद्यमान बुर्ज के साथ-साथ नगरी की संलग्न दीवारों के खण्डरों को चित्रित किया गया। साफ सुथरे रंगीन तथा श्वेत-श्याम छायाचित्र निकाल कर भूमापन रेखा बनायी गयी। वातुकलात्मक भागों के ढीले तथा छोटे टुकड़ों को समुद्र तल से ऊपर निकाला गया। इनमें से एक अर्धचन्द्राकार शिलाखण्ड तथा पच्चर के लिए रेखाछिद्र-युक्त सरदल का उल्लेख करना उचित हो गा। छोटे-छोटे टुकड़ों के साथ इमारतों का मलबा किलेबन्दी के अन्तर्गत चारों तरफ फैला हुआ है। पत्थरों के पाँच लँगर जिनमें से चार में क्रमशः तीन छेद है। पानी से ऊपर निकाले गये। वे ७५ से २५० कि.ग्राम भार के हैं। १४वीं-१२वीं शताब्दी ई. पू. में साइप्रस व सीरिया में इस प्रकार के तीन छेद वाले लँगरों का प्रयोग अग्रलकड़ी के लट्टों के लंगर तथा लोहे के लंगरों के काम में लाये जाने से पहले किया, विशिष्ट ऐतिहासिक जानकारी के लिए हम महाभारत को टटोलते हैं।*

श्रीकृष्ण चन्द्र जी के जीवन का काला अध्याय कंलकित रूप से यादवास्थली में माना जता है जिन्हें श्राप में यह मिला था। एक सबल नेता के अभाव में यादवों में कोई सक्षम व्यक्ति नहीं रह गया था, सम्पूर्ण यादव लोग अन्दर ही अन्दर खोखले पड़ गये थे। ***यादवास्थली*** *श्री कृष्ण का* ***काला अध्याय*** *माना जाता है ऐसा ऋषियों के श्राप से कथाकार ने काल्पनिक रूप से जोड़ा हैं पुरातत्वविदरों का मानना है कि यह यादवास्थली की भूमि सोमनाथ के आसपास होनी चाहिए। भागवात पुराण में साफ-साफ लिखा है कि यादव लोग बार-बार अपने कुलदेवता महादेव जी के दर्शन करने हेतु सोमनाथ आया जाया करते थे। वर्त्तमान समय की द्वारिकापुरी प्रभास-पाटन का अन्तर सोमनाथ से कुल २५० कि.मी. दूर है। उस समय वर्तमान समय के समान यातायात के साधन न थे। जिससे इतना अन्तर के फाँसले को पार करते हुए, द्वारिका से प्रभास-पाटन का आना-जाना सम्भव नहीं हो सकता था। कोड़ीनार से मूल द्वारिकापुरी का स्थान था। कोड़ीनार के नजदीक था, यह काफी तर्कसंगत बैठता है। मेरे मतानुसार* ***यादवों का यादवास्थली नामक जगह सोमनाथ के आसपास होना चाहिए। जिस प्रकार लोहे की तगारी में लोहे का बुरादा में से बीज अंकुरित नहीं होता है ठीक उसी प्रकार इससे मनुष्य का कोई अंग छिल नहीं सकता है किंतु आदमी मर नहीं सकता है।*** *श्री फरोड़ पर स्थित एक पुस्तकालय में कुछ पुरातत्ववेताओं ने दी थी। सन् १९७६ ई. में डॉ. सुरेन्द्र व्यास ने अपने संशोधन के दौरान यह बताया था कि यादवों का यादवास्थली सोमनाथ के आस-पास की पावन भूमि पर रही थी। किंतु उनकी बात की तरफ किसी ने भी ध्यान नहीं दिया था। बरोड़ा स्थित एम.एस. यूनिवर्सिटी, बरोड़ा के पुरतत्वविदों ने यादवास्थली को बेरावल और हरण-नदी के नजदिक अपने शोधकार्य के दौरान आस-पास के विस्तारों में एक बहुत बड़े-भू-भाग में युद्ध की संहार लीला के अवशेष स्वरूप एक बड़े प्रमाण में प्राणियों के कंकाल इस बात की पुष्टि करते हैं कि यही यादवास्थली यही रही हो गी। मेरा भी मत यही कह रहा है।*

भारतीय संस्कृति एवं परम्परा के अनुसार उस समय अग्नि संस्कार की विधि चालू थी जितने यादव लोग यादवास्थली में नर-संहार के दौरान मरे, उन्हें जला दिया गया। यही कारण है कि मनुष्यों के नर-कंकाल नहीं मिलते हैं। जो स्वाभाविक भी है। दांड़ीयाराम ईराक की राजकुमारी ***'उषा'*** *के आगमन के बाद प्रचलित हो गया हो गा, ऐसा माना*

जाता रहा है।[13] ऊपर वर्णित मत से दूर हट कर डॉ. सोमवंशी चंन्द्रिकासिंह, रिसर्च स्कॉलर का मानना है कि **यादवास्थली में जो यादवों का नर-संहार हुआ था, वह हरण नदी के नजदीक न होकर सरस्वती नदी के किनारों पर हुआ था, वह स्थान आज भी यादवास्थली के रूप में माना जाता है। पाण्डवों एवं यादवों का मधुर सम्बन्ध था, जिससे हरिस्तनापुर से पाण्डव लोग बार-बार यादवों से मिलने आते थे। इसका एक कारण यह भी था कि पाण्डव व यादव आपस में वैवाहिक रूप से भी जुड़े हुए थे। सुभद्रा अर्जुन की पत्नी थी। बलराम की पुत्री 'वत्सला' का विवाह भीम के पुत्र घटोत्कच के साथ हुआ था, उसकी वजह से पाण्डव लोग बार-बार द्वारिका आते थे।[14] सौराष्ट्र में अनेकों तीर्थ होने के कारण से भी पाण्डव द्वारिका आते थे। महाभारत में अनेकों जगहों पर इसका उल्लेख मिलता है। सौराष्ट्र में पाण्डवों के रहने की अनेकों निशानियाँ आज भी विद्यमान है।[15] महाभारत के भयंकर युद्ध के अन्त होने पर जब श्रीकृष्ण दुर्योधन की विलाप करती हुई माता गान्धारी को सान्तवना देने गये, तो उसने उन्हें श्राप (शाप) दे दिया, जिसकी वजह से युद्ध के पश्चात् ३६ वें राज्यवर्ष में प्रभास में यादव परस्पर लड़ कर मृत्यु को प्राप्त हुए। प्रभास की सरिता, सरस्वती नदी के किनारे जहाँ तक नरसंहार हुआ, वह भूमि अभी अभी 'यादवास्थली' के नाम से जानी जाती है। यादवों के संहार के साथ ही सौराष्ट्र के एक बलवान एवं शक्तिशाली राजकुल का अन्त सदा-सदा के लिए हो गया।**

सहायक ग्रंथ (Bibliography)

(१) 'सन्देश' हालार, दिनाँक १४/०३/२००६ ई. सन्, दिन बुधवार, पृ. ११, लेख श्री राजु रूपारेलिख, द्वारिका, गुजरात।

(२) (क) 'भगवद्मण्डल' गोंडल देखिए।

(२) (ख) 'सौराष्ट्र नो इतिहास' By स्वर्गीय श्री शम्भु प्रसाद हरप्रसद देसाई, I.A.S .सौराष्ट्र-कच्छ इतिहास परिषद चेरमैन, (गुजराती) पृ. ११ और १२, जूनागढ़.

(३) 'प्रभास अने पाटण' By स्वर्गीय शम्भुप्रसाद हरप्रसाद देसाई कृत।

(४) वही, प्रभास अने पाटण।

(५) कच्छ मित्र, में प्रकाशित डॉ. जे.जे. रावल का लेख, २८/०४/३०१३.?

(६) Encyclopaedia Indica, Vol. VI(6) Page 485.

(७) (क) Encyclopaedia Indica, Vol(6), page 755.

(७) (ख) वही, पृ. ७५५.

(८) महाभारत, रूपान्तरकार, डॉ. रामचन्द्रवर्मा शास्त्री, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ. ३०६, भारतीय प्रकाशन संस्थान नयी दिल्ली- ११००२, संस्करण-२००६, ISBN-81-88122-44-0

(९) धर्मयुग, अंक ३२, अगस्त २३, १९८७ ई. सन् Byडॉ. शि. रंगनाथ राव के लेख से साभार।

(१०) धर्मयुग, अंक ३२, इस विशेष लेख में डॉ. शि. रंगनाथ राव जी ने नवीनतम अर्न्तजल-अन्वेषण के दौरान प्राप्त जानकारी का विवरण दिया है, जो कि राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान, गोवा से सम्बन्ध प्रख्यात सम्मानप्राप्त वैज्ञानिक रहे हैं। वे पिछले कई वर्षों से समुद्र में डूबी द्वारिकापुरी से सम्बन्धित ऐतिहासिक तथ्यों की खोज में जुटे हुए थे। डॉ. राव एक प्रसिद्ध ख्यातिप्राप्त समुद्रशात्रिय पुरातात्विक बेत्ता माने जाते हैं।

(११) वही, पृ. ३२

(१२) वही, धर्मयुग, ३३ अगस्त २३, १९८७ इ. सन् में प्रकाशित रिपोर्ट से उद्धृत।

(13) यादवास्थली : श्रीकृष्ण का कलंकित पासाः राजकोट ५, Monday 06/04/2015, 'सन्देश' में प्रकाशित लेख से उद्धृत।

(१४) सौराष्ट्र का इतिहास (संशोधित व वर्धित नूतन संस्करण) By डॉ. शम्भुप्रसाद हरप्रसाद देसाई कृत आई. ए.एस, सौराष्ट्र-कच्छ इतिहास परिषद के चेरमैन पृ. ११ और १२ (गुजराती) सरदार चौक, जूनागढ़।

(१५) प्रभास और सोमनाथ Byशम्भुप्रसाद, हरप्रसाद देसाई।

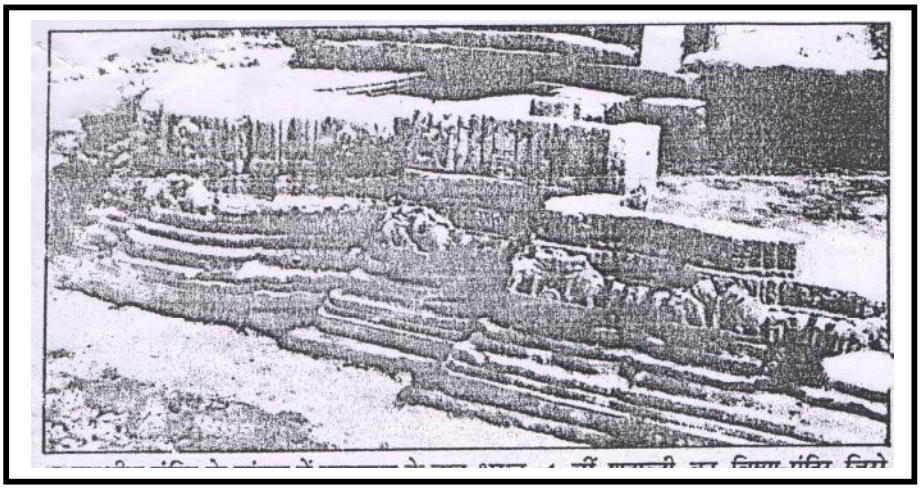

द्वारिकाधीश मंदिर के प्रांगण उत्खनन के बाद भूगत ८वीं शताब्दी का विष्णु-मंदिर जिसे समुद्र ने नष्ट कर दिया।

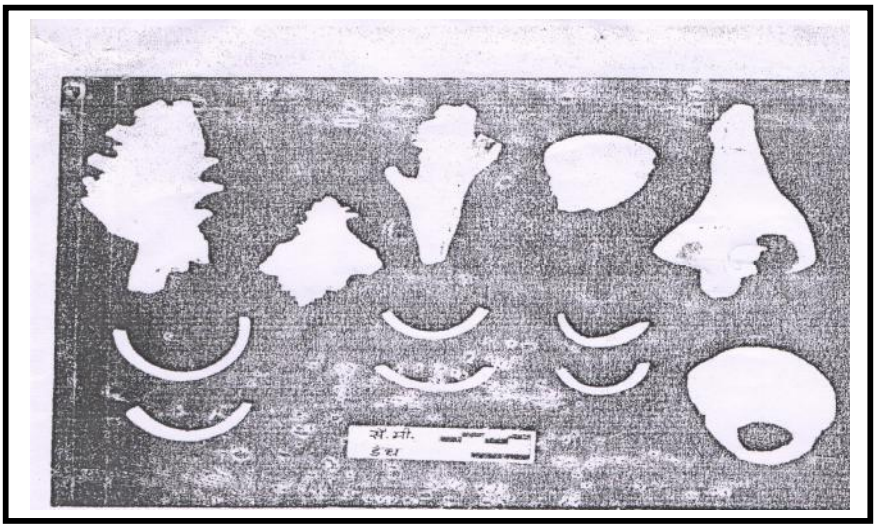

बेट द्वारिका सागर की तलहटी तथा अंतराज्वारीय कटिबंध से प्राप्त शंख शिल्प कृतियाँ

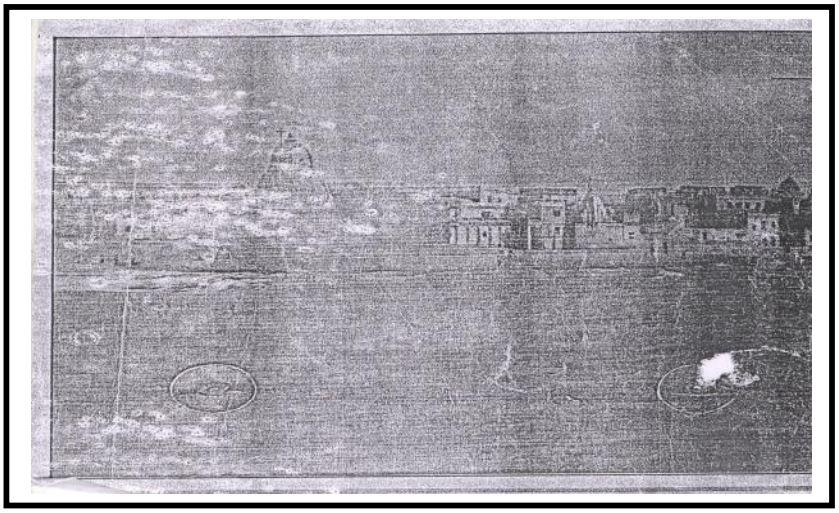

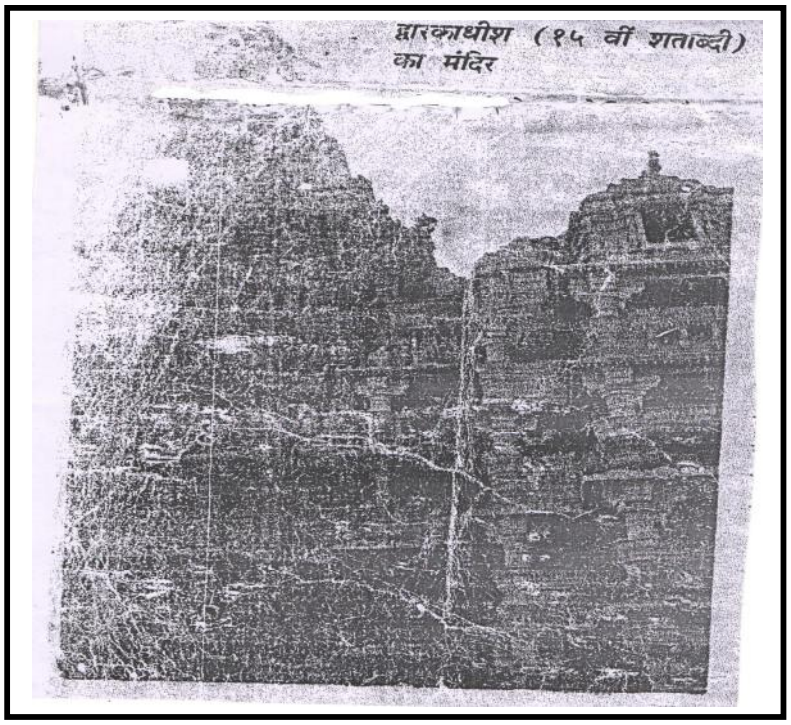
द्वारकाधीश (१५ वीं शताब्दी)
का मंदिर

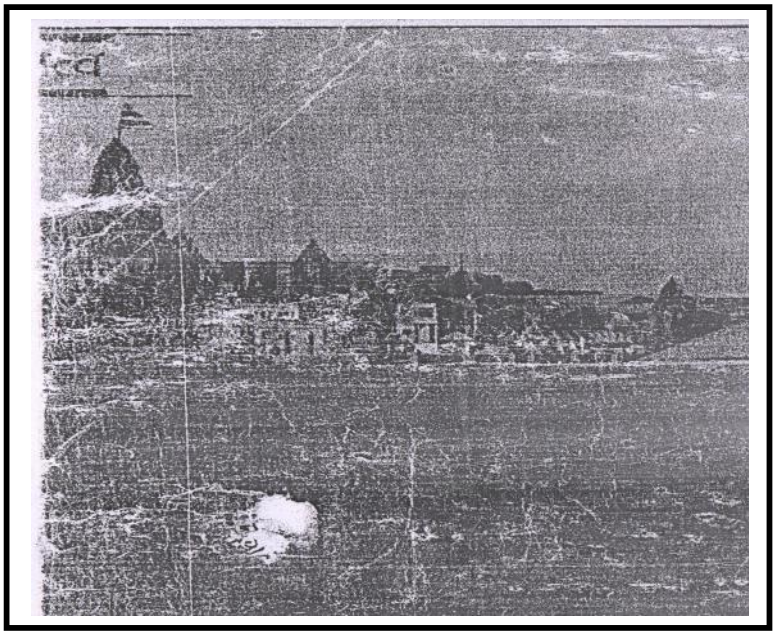

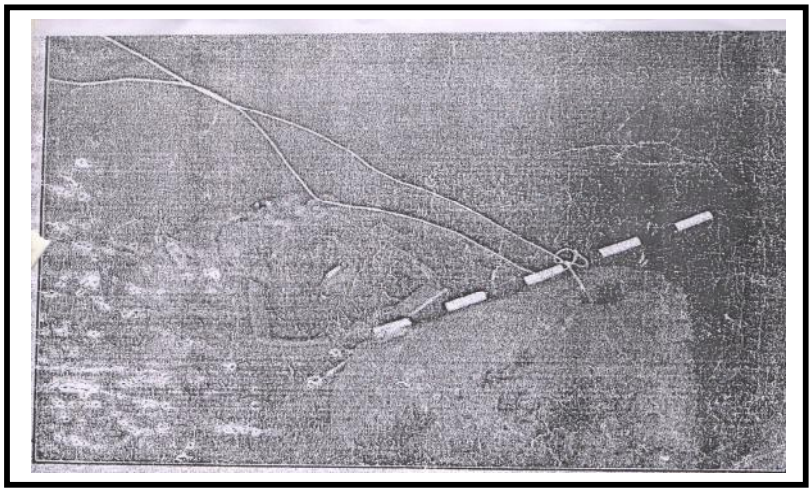

Dr. C.S. Somanvanshi
M.A. (4th Subjects), Ph.D., M.R.P./M.R.P. (U.G.C)
Research Scholare, Ph.D. Recognized Guidel Research Supervisor , Adipur (Kutch)